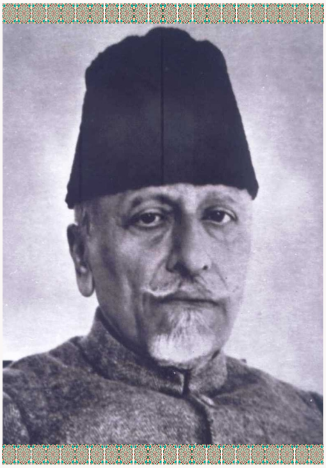

मौलाना आज़ाद स्मृति व्याख्यान

राष्ट्र निर्माण और आत्मनिर्भर भारत में शिक्षा की भूमिका

विषय पर

श्री तरुण विजय
पूर्व सांसद, राज्यसभा
पूर्व संपादक, पाञ्चजन्य
पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
17 - बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली - 110016, भारत

11 नवंबर, 2024

National Institute of Educational Planning and Administration

The National Institute of Educational Planning and Administration is the premier national institution engaged in all aspects of educational policy, planning, and administration. Originally established in 1962 as the Asian Centre for Educational Planners and Administrators, it is today conferred with the status of a university, and is fully funded by the Ministry of Education, Government of India. Over the last several decades, through its research, teaching, and capacity building activities with educational administrators at national, state, district, and sub-district levels, the organization has rightfully earned the status of being the apex national institution steering educational policy -planning as also in guiding on the ground change processes.

As a university, the NIEPA today has a multi-disciplinary faculty, and their scholarship contributes to broadening of the inter-disciplinary social science perspective, specially with respect to education. The NIEPA offers Post Graduate Diploma, M.Phil, and Doctoral programmes in educational policy and development. The institution hosts leading scholars of education globally, as also visiting delegations of educational administrators from the developing world, including an in-residence diploma programme for educational administrators.

राष्ट्र निर्माण और आत्मनिर्भर भारत में शिक्षा की भूमिका

श्री तरुण विजय
पूर्व सांसद, राज्यसभा
पूर्व संपादक, पाञ्चजन्य
पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण

मौलाना आज़ाद स्मृति व्याख्यान
(11 नवंबर, 2024)

© राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, 2024
(मानित विश्वविद्यालय)

प्रकाशन वर्षः 2024

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा)
17-बी, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 के कुलसचिव द्वारा प्रकाशित और नीपा द्वारा डिजाइन एवं मेसर्स वीबा प्रेस प्रॉइवेट लिमिटेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली 110020 में मुद्रित।

राष्ट्र निर्माण और आत्मनिर्भर भारत में शिक्षा की भूमिका#

श्री तरुण विजय*

आदरणीय कुलपति प्रोफेसर शशिकला वंजारी जी, आज के समारोह के परम विद्वान अध्यक्ष प्रो. मुरली मनोहर पाठक जी, विद्वान और परम मित्र रजिस्ट्रार श्री सूर्य नारायण मिश्र जी, यहाँ उपस्थित महिमावान विद्वज्जन, प्रिय मित्रों।

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण और आत्म निर्भरता का लक्ष्य प्राप्त करने के विषय पर विमर्श हेतु हम यहाँ एकत्र हुए हैं। यह एकत्रीकरण वस्तुतः एक विचार यज्ञ है - एक सारस्वत अनुष्ठान है।

जैसे विभिन्न अनुभवों से गुजरते हुए राजकुमार सिद्धार्थ गौतम बुद्ध हुए, जैसे चाणक्य के शिष्यों ने एक प्रबल प्रतापी मगध साम्राज्य की स्थापना की, उसी प्रकार हम कैसे एक शौर्यवान, आत्मनिर्भर, अविजेय, सुखी समृद्ध और सुरक्षित राष्ट्र बना सकते हैं, इस हेतु यह मंथन एक महत्त्वपूर्ण आयोजन है।

---

* पूर्व सांसद, राज्यसभा

* पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, नई दिल्ली

15 वाँ मौलाना आज़ाद स्मृति व्याख्यान सोमवार, 11 नवंबर, 2024, स्टेन सभागार, भारत पर्यावास केंद्र, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003

यह व्याख्यान भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जी की स्मृति में आयोजित है। उनका मक्का में जन्म हुआ था, वे इस्लामिक शिक्षा के अत्युच्च विद्वान थे और उनकी पुस्तकें आज भी अनेक इस्लामी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं। वे भारत विभाजन के प्रबल विरोधी थे। मैं उनकी स्मृति को प्रणाम करता हूँ।

मित्रों, शिक्षा का उद्देश्य क्या है? शिक्षा का उद्देश्य मूल्याधारित आत्मबोध कराना है।

आत्मनिर्भरता की दिशा में हम उसी समय बढ़ सकते हैं जब हमें अपनी पहचान हो। हम कौन हैं? क्या हम मात्र एक भारतीय पासपोर्ट-धारी नागरिक हैं जिनका यहाँ संयोगवशात् जन्म हुआ और हम लौकिक अक्षर ज्ञान प्राप्त कर श्रेष्ठतम नौकरी और व्यवसाय के अवसर खोजते हुए ऐश्वर्यशाली जीवन यापन हेतु, आजीविका के लिए प्रयास करेंगे और देह त्याग कर देंगे? अथवा हृदय में इस परम पवित्र भारत भूमि के प्रति अनन्य निष्ठा का भाव पैदा करते हुए श्रेष्ठ शिक्षा और आजीविका के साधनों के होते हुए भी हम भारत की सेवा और रक्षा करने का भाव उद्दामता से जागृत कर इसके लिए कहीं भी कुछ भी करने के लिए तैयार रहेंगे?

एक के हृदय में तिरंगा देखते ही गंगा, सिंधु, कावेरी का जल स्पर्श करते ही, भारत का नाम सुनते ही रोमांच, श्रद्धा और सम्मान पैदा होता है। वह गंगा के पानी को जल कहता है, उसको घर में सुरक्षित रखता है, अंतिम क्षणों में मुंह में गंगा जल जाये इसका संकल्प लेता है, सैनिक बनता है, सीमा पर तैनात रहता है, शत्रु के संहार की तैयारी रखता है, अपना बलिदान भी देता है। दूसरा गंगा को सिर्फ एक पानी का प्रवाह और तिरंगा एक कपड़ा मानता है।

इन दोनों में यदि कोई अंतर है तो वह केवल शिक्षा का है।

जैसे माटी को लेकर कुम्हार जल भरने वाला घट बनता है तो अनगढ़ उससे ही कूड़ा दान बना देता है, उसी प्रकार अच्छी शिक्षा राष्ट्र निर्माण हेतु, जीवन के उच्च ध्येय प्राप्ति हेतु बुद्ध, चाणक्य, आदि शंकर, चन्द्रगुप्त, विवेकानंद, गाँधी, सुभाष और हेडगेवार भी बना सकती है और यदि शिक्षा में विकृति रही तो विचार विभ्रम युक्त ऐसे अनगढ़ संवेदन हीन व्यक्ति तैयार हो जाते हैं जिनको शत्रु और मित्र में अंतर नहीं महसूस होता जो भारत में रहकर भारत के विरुद्ध षड्यंत्रों के सूत्रधार बन जाते हैं।

वे चाहे सम्पूर्ण विश्व घूम लें, धन सम्पदा अर्जित कर लें लेकिन जो भारत के लिए कुछ नहीं कर पाया उसकी समस्त सम्पदा और विद्या धूल समान है। प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी ने इस सदी के प्रारम्भ में कहा था। **तेरे लब पे है इराको, शामो, मिश्रो, रोमों चीं, लेकिन अपने ही वतन के नाम से वाकिफ नहीं। अरे सबसे पहले मर्द बन हिन्दोस्तां के वास्ते, हिन्द जाग उठे तो फिर सरे जहाँ के वास्ते।**

पहले इस देश को, अपनी मातृभूमि को जानना समझना जरूरी है। यहाँ की सभ्यता संस्कृति में अवगाहन जरूरी है। स्मृति का जागरण इसीलिए शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग है। कितने लोगों को जानकारी है कि दिल्ली के संस्थापक महाराजा कौन थे? दिल्ली के किस भाग में महान गुरु तेग़ बहादुर साहेब, और अनन्तर बाबा बंदा सिंह बहादुर साहेब के बलिदान हुए? दिल्ली के अंतिम मराठा सम्राट कौन थे? इन्द्रप्रस्थ के पुरावशेष यहाँ कहाँ आज भी मिलते हैं? वे पाँच गाँव कौन से हैं दिल्ली के आस-पास, जिनको पांडवों ने माँगा था?

स्मृति जागरण से राष्ट्र निर्माण होता है, आत्मनिर्भर भारत बनता है, अक्षर ज्ञान से टीए-डीए वाली नौकरी मिलती है।

जो शिक्षा केवल अच्छे वेतन, कोठी, गाड़ी, यूपीएससी परीक्षा की तोता रटंत सफलता को लक्ष्य बना दे, उससे मूल्य अनुपस्थित रहते हैं। शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति ज्ञान की शक्ति को पहचाने, नौकरी की शक्ति को नहीं। हमने स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया था, ब्रिटिश शासकों ने नौकरशाही की अवधारणा स्थापित की -क्योंकि उनको नौकर चाहिए थे। नौकरशाही में शामिल होना, नौकर बनना हमरे युवाओं की सबसे बड़ी अभिलाषा बने अथवा स्वाधीनता, स्वराज, स्वयं समर्थ होना इसका अर्थ कहाँ बताया जाता है? टाई पहनो, नौ बजे दफ्तर पहुंचो, पाँच बजे घर लौटो, बाबूजी वाली ज़िन्दगी में स्वत्व, स्वाधीन होना, अपने मन के आनंद और रचनात्मकता के अनुरूप कुछ कर पाना- इसका अवकाश मिलना चाहिए। शिक्षा से हमें अपने देश, उसके इतिहास, उसकी धरोहर के बारे में जानकारी मिलनी चाहिए। ब्रिटिश इतिहास और आक्रमणकारियों की गाथाएं ही पढ़ कर सरकारी नौकरी को जीवन का सबसे बड़ा ध्येय मानने की मानसिकता दास मानसिकता है।

यस सर और जी हजूर की इस उपनिवेशवादी मानसिकता को मोदी सरकार में खत्म करने का अभियान चला है - मुद्रा योजना, स्टार्ट अप्स, उच्चतर विज्ञान शोध, अपने उद्योग और व्यापार प्रारम्भ करने की योजनाएं, स्वयं-भू भारतीय नागरिक बनकर अपने राजा स्वयं बनो- नौकरी करने की भीड़वादी मनोवृत्ति छोड़ो - यह एक नवीन भारत के नवीन सामर्थ्य का प्रतीक वातावरण बना है। नेहरू वादी और वाम पंथी

मानसिकता से मुक्त यह नूतन भारत समाजवादी प्रयोगों की असफलता और सोवियत रूस के मॉडल की निरर्थकता को जान गया है जिसमें स्वाधीनता और स्वराज को एकतंत्रवादी सरकारी लालफीताशाही के शिकंजे में बाँध दिया गया था।

विद्यालयों में ही उद्योग प्रारम्भ करने की शिक्षा और व्यापार अथवा स्टार्ट-अप प्रारम्भ करने के पाठ्यक्रम कक्षा आठ से शुरू किये जाने लगे हैं। इनको और बढ़ावा मिलना चाहिए। सबसे पहले भारतवर्ष में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने विश्वविद्यालय में ही उद्योग प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम प्रारम्भ करवाया था।

प्रत्येक विद्यालय में भारत देखो यात्रा अभियान कार्यक्रमों को और बढ़ावा देना चाहिए ताकि पूर्वांचल, उत्तर पूर्व, लद्दाख, अंडमान और द्वारका से रामेश्वरम तक के छात्र एक दूसरे के क्षेत्र, महापुरुषों, चेहरों, भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाजों से परिचित हों सकें।

पूरे देश में विद्या और संस्कारों के प्रसार का एक महायज्ञ राष्ट्रीयता से प्रेरित बौद्धिक वीरों ने विद्या भारती के माध्यम से प्रारम्भ किया जिसके आज देश के हर कोने में तीस हजार से अधिक विद्यालयों में तीस लाख छात्र पढ़ रहे हैं, बिना किसी सरकारी सहायता के। उत्तरपूर्वांचल में विवेकानंद केंद्र के विद्यालय उस क्षेत्र में और हजारों मठ, आश्रम, संत, देश के अनेक हिस्सों में लाखों छात्रों को शिक्षित कर राष्ट्र सेवा में समर्पित होने की प्रेरणा दे रहे हैं। नए गुरुकुल, भारत के प्राचीन प्रज्ञा प्रवाह को आत्मसात करने वाले वैज्ञानिक, शोधार्थी आईआईटी संस्थानों से निकल कर नवीन भारत के सूर्य के रश्मिरथी बने हैं। इन सबको देखे, समझे और मान्य किये बिना हमारा विमर्श आगे नहीं बढ़ सकता।

अक्षर ज्ञान और विद्या, इन दोनो में हम अंतर समझते है तो समझना होगा कि हमारे जीवन का पहला विद्यालय घर होता है।

पहली आचार्य, पहली कुलपति हमारी माँ होती है। घर अच्छा है तो राष्ट्र अच्छा है, घर बिगड़ गया तो राष्ट्र निर्माण नहीं होता वहां दुकान निर्माण होता है। पैसा कमाओ और कोई भी शासन आकर - अंग्रेज हो या स्वदेशी उसकी चिंता मत करो। घर अच्छा नहीं तो नक्सल और माओवादी, आतंकवादी जिहादी पैदा होते हैं जो अपने देश के विरुद्ध लड़ते हैं, घर अच्छा हो तो सैनिक पैदा होते हैं जो सियाचिन से लेकर तवांग तक भीषण परिस्थितियों में राष्ट्र रक्षा करते हुये जीवन बलिदान कर देते हैं। घर अच्छा होगा तो माता-पिता अपने खर्च कम करके, आधा भोजन भी करते हुए बच्चे को अच्छी से अच्छी शिक्षा हेतु श्रेष्ठ विद्यालय में पढ़ने भेजेंगे, उनकी उच्च शिक्षा का प्रयास करेंगे। घर में शिष्टाचार, माता-पिता का आदर, अच्छे भाव पैदा करने वाले ग्रंथो से परिचित कराएँगे, रामायण-महाभारत का परिचय कराएँगे, सभ्यता के परंपरागत तीज त्योहारों से परिचित कराएँगे, पितरों का सम्मान और भारत के महापुरुषों से परिचित कराएँगे, अच्छे बनो बड़े बनो भारत माता की सेवा करो का भाव मन में बिठाएंगे।

यह होता है घर का विश्वविद्यालय। इसको पहले सहेजना जरूरी है।

जैसे नवजात शिशु के लिए माँ का दूध अमृत होता है वैसे ही नूतन छात्र के लिए मातृ भाषा का ज्ञान अमृत होता है। प्रारम्भिक शिक्षा यदि मातृ भाषा में मिलती है तो छात्र का व्यक्तित्व संवरता है - उसे मनुष्यता का बोध होता है। कविगुरु रवींद्र नाथ ठाकुर ने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा

अपनी मातृभाषा में ही देने का प्रबल आग्रह किया था। उन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना की – उसका समस्त कार्य-कलाप बांग्ला भाषा में ही निर्धारित किया – अंग्रेजों के समय स्थापित विश्वविद्यालय को उन्होंने वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी नहीं कहा। जब भारत के सबसे बड़े विश्वविद्यालय कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करने हेतु उस महान संस्थान के सबसे कम उम्र के कुलपति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कविगुरु को आमंत्रित किया तो रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पहली शर्त थी – मैं बांग्ला भाषा में ही भाषण दूंगा यदि स्वीकार हो तभी आऊंगा वर्ना नहीं।

वे ब्रिटिश काल में किसी भी विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा में सम्बोधन करने वाले पहले महापुरुष बने।

राष्ट्र निर्माण और आत्मनिर्भर देश हेतु पहली शर्त है अपने राष्ट्र और उसकी भाषाओं के प्रति अगाध प्रेम, निष्ठा और समर्पण का भाव जागृत करना।

श्री अरविन्द ने कहा था – यह राष्ट्र मेरे लिए केवल कुछ नदियों, पहाड़ों, सड़कों, भवनों और व्यक्तियों का समुच्चय मात्र नहीं है बल्कि भारत मेरे लिए साक्षात् जगजननी, भवानी भारती का स्वरुप है, यह मेरे लिए भवानी भारती देवी है और मैं उसकी संतान हूँ। भारत का स्वरुप अर्थात भारत माता, भवानी भारती का स्वरुप समस्त संसार में विलक्षण है। पश्चिम में फादरलैंड कहते हैं। वहां मातृभूमि का भाव नहीं है। हम समस्त जीवन कार्यों में माँ को सर्वोपरि मानते हैं – शिक्षा के लिए सरस्वती, धन के लिए लक्ष्मी, शक्ति के लिए दुर्गा। शिवा के बिना शिव भी शव है यह हम कहते

हैं, पृथ्वी हमको धारण करने वाली मातृ स्वरुपा है। प्रतिदिन हम उसको प्रातःकालीन प्रणाम करते हैं, पादप स्पर्शं क्षमस्व मे – कह कर भूमि पर पाँव रखते हैं, हम पर्वतारोहण करते हैं तो शिखर जीत लिया ऐसा नहीं कहते – जब सागरमाथा पर, जिसे एवरेस्ट भी कहने लगे, बछेंद्री पाल पहुँची तो उसने पहले चरण रखकर तिरंगा नहीं गाढ़ा बल्कि दीप कुंकुम अक्षत चढ़ाये देवी दुर्गा को प्रणाम किया और धन्यवाद दिया कि माँ आज तूने मुझे यहाँ बुलाया उसके लिए कोटि कोटि आभार। यह है भारतीय – दृष्टि जो प्रकृति को मातृ स्वरूपा आराध्य मानती है विजित करने का निर्जीव लक्ष्य नहीं।

यह भाव कहाँ से पैदा हुआ हैं?

एतद्दशे प्रसतूस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वंस्वंचररत्रंहशक्षेरन्पहृथव्यांसववमानवाः ।।

ऋषियों की इस वाणी से ही स्पष्ट है कि राष्ट्र के प्रति अनन्य निष्ठा का भाव हमारे आचार्यों द्वारा शिक्षा के माध्यम से अंकुरित किया गया। अपने अपने चरित्र से पृथ्वी के समस्त मानवों को शिक्षित करने का शिक्षक आचार्यों द्वारा अपने चार्टर के आदर्श उदाहरण देते हुए किया गया।

समस्त मानव जाति, समस्त पृथ्वी के लोगो का कल्याण करने की भावना हमारे यहाँ, हिन्दू वैदिक सनातन ग्रंथों और आचार्यों के द्वारा दी जाती रही है। हमारे यहाँ गृह प्रवेश पूजा, विवाह, अंतिम संस्कार तक जो मन्त्र बोले जाते हैं उनमें समस्त चराचर जगत के कल्याण का भाव निहित होता है – सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया कहा जाता है, 'ॐ शांति

पृथ्वी शांति आपा शांति वनस्पतये' कहा जाता है। हम केवल अपने घर और नगर के लिए नहीं अपितु वसुधैव कुटुम्बकम की बात करते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जिन्होंने पूंजीवाद और साम्यवाद की निरर्थकता सिद्ध करते हुए एकात्म मानव दर्शन का सृजन किया, ने कहा था कि व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ना ही सामाजिक विकास का लक्ष्य है। व्यक्ति से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व कल्याण का बोध जागृत होना ही मनुष्यत्व के विकास के अभीप्सित लक्ष्य हो सकते हैं और इन सबको प्राप्त करने की क्षमता उत्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। यही भारतीय सनातन दर्शन है, जिसे रामकृष्ण परमहंस ने 'जीबेर शेवा शिबेर शेवा' कह कर समझाया। मनुष्य की सेवा, अपने भीतर के मैं को दबा कर उसको समष्टि के साथ विलीन करते हुए अपनी समस्त विद्याओं का उपयोग समष्टि के हित में करना ही मनुष्य धर्म है। राजा रंतिदेव इस वैदिक सनातन विद्या के लक्ष्य को प्रकट करने वाले सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। उनके महान पुण्यों के कारण वे सदेह स्वर्ग ले जाये जा रहे थे, परन्तु एक सूक्ष्म भूल के प्रायश्चित स्वरुप उनको नरक के ऊपर से केवल गुजरना पड़ा। जिस क्षण राजा रंतिदेव का विमान नरक के ऊपर पहुंचा तो उनको स्पर्श करते हुए आ रही पवन के झोंकों ने नीचे नरक वासियों को असीमित राहत और शांति प्रदान की और वे सब समवेत स्वर में चिल्लाने लगे हे राजन! कुछ क्षण और रुके रहो, रुके रहो, हमें कुछ और शांति दो, हमें वेदना से दूर करो... यह देख कर विमान के सारथी से सब बातें जानी और रन्तिदेव ने स्वर्ग जाने से मना कर दिया - न त्वहम् कामये राज्यम् न स्वर्गम् न पुनर्भवम्। कामये दुःखतप्तानम्

प्राणिनामार्तिनाशनम्।। न मुझे स्वर्ग चाहिए, न राज्य और न ही मोक्ष का मैं अभिलाषी हूँ। मुझे केवल दुःख से विगलित हो रहे इन प्राणियों की वेदना का शमन चाहिए – ले जाओ तुम अपना विमान मैं यहीं रुकूंगा।

यह है सच्ची शिक्षा और राष्ट्र निर्माण की भावना।

भारत, पराक्रमी, सुशिक्षित और समृद्ध भारत, स्वतंत्रता के पश्चात बहुत आगे बढ़ा और हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दृष्टि एवं कल्पनाओं को साकार करते हुए हम आज विश्व पटल पर अपनी अनूठी शैक्षिक और वैज्ञानिक पहचान बना रहे हैं। हमने दिखाया कि जिस चन्द्रमा के दक्षिणी भाग पर कभी किसी देश का यान नहीं उतरा वहां इसरो ने चंद्रयान उतार कर विश्व को चकित कर दिया, अधिकांश महिला वैज्ञानिकों के नेतृत्व में मिली सफलता के पीछे भारत की शिक्षा और भारत के विद्या वीरों का कमाल था। आज दुनिया का कोई ऐसा देश या क्षेत्र नहीं है जहाँ भारत के पढ़े लिखे, भारतीय, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अडोबे, आईबीएम्, यू-ट्यूब के सीईओ बने हैं, टेस्ला, मेटा, इंटेल जैसे संगठनों में अत्युच्च ऑपरेशनल पदों पर भारत की विद्या शक्ति के प्रतिनिधि बैठे हैं। विश्व में भारत के डॉक्टरों, इंजीनियरों, सॉफ्ट वेयर इंजिनीयरों, धर्माचार्यों, आध्यात्मिक प्रबोधनकारों का सर्वाधिक सम्मान है। अमरीका के सर्वोच्च धनिक एवं ज्ञानवान वर्ग में भारतीयों का स्थान है और उन्होंने भारत पुण्य भूमि के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भी ध्यान रखा है।

भारत में स्वतंत्रता के समय 12 प्रतिशत साक्षरता दर थी, सात सौ वर्षों के निरंतर संघर्ष, प्रतिरोध और सदैव रियासती राज्यों, मुगलों, अंग्रेजों के

अत्याचारों से लोहा लेने वाला यह राज चोल, चेर, कृष्णदेव राय, शिवाजी, राणा प्रताप और रणजीत सिंह का देश अचानक लोकतान्त्रिक पद्धति के सांचे में ढला तो अंग भंग के साथ लाखों निर्दोष भारतीयों का नरसंहार हुआ। नवोदित राष्ट्र के समक्ष पुनः वैश्विक मंच पर अभिमान के साथ खड़ा होने की चुनौती थी। तब से अब तक जो प्रगति भारत ने की है वह विश्व मैं अद्‌भुत कीर्तिमान है। हमारे शिक्षकों और शिक्षार्थियों – दोनों का 12 प्रतिशत साक्षरता वाले देश में आज साक्षरता 84 प्रतिशत तक पहुंची है जो शीघ्र ही शत प्रतिशत तक जा रही है।

1950 में पूरे देश में 578 कॉलेज थे आज उनकी संख्या पचास हज़ार से ऊपर है, तब देश भर में केवल 27 विश्वविद्यालय थे आज 1100 से अधिक हैं, तब एक आईआईटी, खड़गपुर में खुला था। आज 23 आईआईटी, और 21 आईआईएम हैं। केवल प्राथमिक और सेकंडरी स्तर पर विद्यालय जाने वालों की संख्या 25.57 करोड़ से अधिक है – हर वर्ष इसमें 20 लाख छात्रों की वृद्धि होती है। यानी जापान, इण्डोनेशिया, विएतनाम, बांग्लादेश, ब्रिटेन की जनसँख्या से अधिक तो हमारे विद्यालयों में छात्रों की संख्या है। हर गाँव, नगर में हर माता–पिता की एक ही इच्छा है – वे कम खा लें पर अपने बच्चों को अधिक से अधिक पढ़ा दें। आईएएस, आईपीएस, इसरो के वैज्ञानिक, सेना के अफसर और जवान, सॉफ्ट वेयर इंजीनियर – हमारे गाँवों से, रिक्शा चालकों, मजदूरों, रोज पटरी पर सामान बेचने वालों, साधारण गृहस्थों के उन परिवारों से आ रहें हैं जहाँ दो समय का भोजन और बिजली की सुविधा भी नहीं हो पाती थी। यह शिक्षा का चमत्कार है।

जीएसटी जब लागू किया गया तो विनाश के प्रवक्ताओं ने उसका मजाक उड़ाया था। आज जीएसटी की प्राप्तियां - रिफंड के बाद 2024-25 मई तक ₹ 3.36 लाख करोड़ तक पहुँची है अर्थात 11.6% की वृद्धि दर। यूपीआई व्यवहार से पूरा विश्व अचंभित है। बिना शिक्षा के क्या कोई यूपीआई से पैसों का लेन-देन कर सकता है? सन 2023-24 में भारत में 131 अरब यूपीआई लेन-देन हुए पिछले साल से 57% की वृद्धि। केवल इस वर्ष प्रारंभिक पांच महीनों में कुल 7,062 करोड़ रुपये के लेन-देन यूपीआई से हुए। एक बड़ा चमत्कार रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का हुआ है। एक समय था जब भारत के पास कश्मीर युद्ध के लिए जीपें तक नहीं थीं। लन्दन आर्डर भेजा गया - देश का पहला जीप घोटाला आप गूगल कर सकते हैं। आज भारत स्वयं अपने रक्षा शस्त्र-अस्त्र, ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र का उत्पादन और निर्यात कर रहा है। अब तक हम ₹ 21,083 करोड़ रुपये के रक्षा उत्पाद निर्यात कर चुके हैं जो गत वर्ष की तुलना में 32.5% अधिक है। अगले पांच वर्षों में रक्षा उत्पादन का निर्यात पचास हज़ार करोड़ से अधिक करने का लक्ष्य है। यह शस्त्र और उपकरण हम अमरीका, रूस, इजराइल, इटली जैसे देशों को भी निर्यात कर रहे हैं।

यह सब अच्छी शिक्षा और बढ़ते बदलते भारत के युवा विद्या वीरों का कमाल है। आप देखिये आज़ादी के समय केवल पांच लाख अध्यापक थे, आज उनकी संख्या एक करोड़ के आसपास है। तब केवल छह प्रतिशत विद्यालयों में पीने का पानी था आज UNDP रिपोर्ट के अनुसार 98 प्रतिशत विद्यालयों में पानी पहुँच गया है।

श्री नरेंद्र मोदी शासन में आयी नयी शिक्षा नीति ने भारत में व्याप्त उपनिवेशवाद और दास मानसिकता के विरुद्ध एक बड़ी लड़ाई छेड़ी है।

इसमें निहित है मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान, प्राचीन ज्ञान पीठों की प्रतिष्ठापना, नालन्दा विश्वविद्यालय को प्रधान मंत्री श्री मोदी और शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने प्राचीन गौरव पद पर पुनः प्रतिष्ठित किया है, उनको देश के बौद्धिक जगत की ओर से कोटि कोटि धन्यवाद।

नालंदा धर्माधारित विश्वविद्यालय था। लेकिन प्रारम्भ में उसकी परिकल्पना के साथ न्याय नहीं हुआ। केवल श्री मोदी जी ने उसके प्राचीन स्वरुप, चैतन्य और बौद्धिक गहनता को पहचाना तथा उसके अनुरूप व्यवस्था की। नालंदा विश्वविद्यालय को बख्तयार खिलजी ने ध्वस्त किया, जलाया। विदेशी इस्लामी आक्रमणकारी सबसे प्रथम ग्रंथागार ध्वंसक रहे क्योंकि ज्ञान के प्रकाश से उनको घृणा थी। इस विश्वविद्यालय की पुनरुस्थापन को मैं उसी प्रकार भारतीय सभ्यता और शौर्य के पुनरोदय का चिह्न मानता हूँ जैसे अयोध्या में श्री राम का मंदिर हमारे सामूहिक चैतन्य और अभिमान की वापसी का प्रतीक बना है।

नयी शिक्षा नीति में स्वयं जैसे मंच की स्थापना, शिक्षा हेतु वित्त पोषण की व्यवस्था - HEFA -, एक लाख करोड़ रुपये के पूँजी निवेश के साथ शैक्षिक संरचनात्मक पुनः सशक्ति करण Revitalising Infrastructure and Systems in Education - ज्ञान - अर्थात Global Initiative of Academic Networks - इन सबसे एक नए भारत का उदय हो रहा है। यह भारत परम वैभव के लक्ष्य को प्राप्त करेगा, विश्व शांति के लिए, समस्त मानव जाति को मार्ग उपलब्ध कराएगा, आज जहाँ जहाँ घृणा, वैमनस्य, हिंसा, मजहबी असहिष्णुता और युद्ध की स्थितियां हैं उस को बदलने के लिए भारत अपनी नियति प्रदत्त भूमिका निभाने हेतु सिद्ध हो

रहा है। उस नवीन, विद्या शिखर, ज्ञानवान, धर्म पथ गामी, नवीन भविष्य के सर्जक भारत के अभिनन्दन और उसमें अपने योगदान हेतु हम सब तैयार रहें- यही आज के दिन का विशेष सन्देश है।

Maulana Abul Kalam Azad Memorial Lectures

1. **Education Modernisation and Development**
   K. N. Pannikkar (2010)
2. **Maulana Azad and Mahatama Gandhi: A Comparative Study**
   Mushirul Hasan (2011)
3. **De-Centering European Liberalism in India's Democratic Struggles**
   Amiya K. Bagchi (2012)
4. **Recolonization of the Indian Mind**
   Peter Ronald de Souza (2013)
5. **Bridging the Divide: Democracy and Inequalities**
   Zoya Hasan (2014)
6. **Abul Kalam Azad: An Epitome of Culture**
   Kapila Vatsyayan (2015)
7. **Higher Education in India: Yesterday, Today and Tomorrow**
   Aparna Basu (2016)
8. **Essentials for Excellence in Higher Education: Why Should the Obvious be so Elusive?**
   Furqan Qamar (2017)
9. **Diversity Management under Indian Constitution**
   Faizan Mustafa (2018)
10. **Education and the Complex World of Culture**
    Neera Chandhoke (2019)
11. **The Future of Higher Education: Through the lens of the History and Philosophy of Science**
    Dhruv Raina (2020)
12. **Inter-Generational and Inter-Regional Differentials in Higher Level of Education in India**
    Abusaleh Shariff (2021)
13. **On Dialogue and Art of Listening: Rethinking our Classrooms**
    Avijit Pathak (2022)
14. **Inclusion of the Indian Knowledge in the Present Education**
    Chand Kiran Saluja (2023)

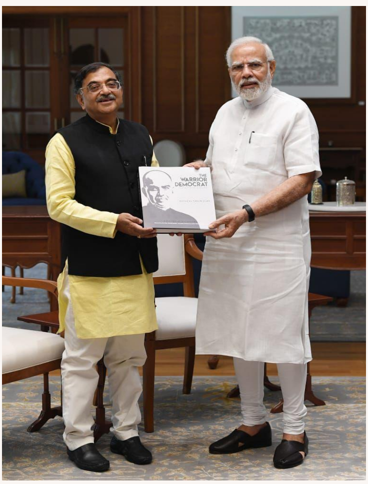
THE WARRIOR DEMOCRAT

श्री तरुण विजय

श्री तरुण विजय भूतपूर्व सांसद राज्यसभा, 'पाञ्चजन्य' के पूर्व संपादक, भूतपूर्व अध्यक्ष राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, भारत सरकार एवं उत्तराखंड युद्ध स्मारक के अध्यक्ष।

श्री तरुण विजय भारत के एक प्रमुख पत्रकार, संपादक और लेखक के साथ ख्यातिलब्ध सांसद और फिल्म निर्माता हैं, जिन्होंने हिंदी और अंग्रेजी में तेईस पुस्तकों की रचना की है और इनमें से कई पुस्तकों का गुजराती, मराठी, कन्नड़ और मंदारिन सहित कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आपने सिंधु नदी पर वृत्तचित्र बनाने के साथ, ऑल इंडिया रेडियो पर लोकप्रिय कार्यक्रमों की पटकथा लिखने एवं एंकरिंग का कार्य भी किया, आपने गीत और नाटक अनुभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के लिए उपयोग में लाये जाने वाले गीतों की रचना भी की।

आपने द ब्लिट्ज़ के लिए एक घुमंतू जनजातीय संवाददाता के रूप में काम किया तथा द स्टेट्समैन, फेमिना, इंडियन एक्सप्रेस, हिंदुस्तान टाइम्स और द हिंदू के लिए आलेख लिखे।

आप दो दशकों तक पाञ्चजन्य के मुख्य संपादक रहे। आपने सिंधु महोत्सव लद्दाख की संकल्पना की। दूरदर्शन के लिए सिंधु नदी पर भारत के पहले धारावाहिक की पटकथा का लेखन और निर्देशन किया, आप भारत सरकार द्वारा नियुक्त केंद्रीय प्रेस प्रत्यायन समिति (सीपीएसी) के सदस्य रहे। आप ने वर्ष 2001 से देहरादून में हिमालयी एवं उत्तर-पूर्व के बच्चों के लिए मौलिक शिक्षा की शुरुआत की, जहाँ अब तक नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, असम, लद्दाख तथा उत्तराखंड से आने वाले लगभग 2000 बच्चों को निशुल्क शिक्षा एवं निशुल्क छात्रवास की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

आप भारत के वह प्रथम सांसद हैं जिन्होंने उत्तराखंड में शहीदों की स्मृति में अपनी सांसद निधि के ढाई करोड़ रुपये की लागत से उत्तराखंड युद्ध स्मारक का निर्माण किया।

आप ने वर्ष 1996 में लद्दाख से सिन्धु दर्शन अभियान की शुरुआत की तथा हाल ही में भारतीय वायु सेना के लिए आप द्वारा संकल्पित एवं संयोजित ऐतिहासिक वायु वीर विजेता कार रैली का आयोजन थोइस (सियाचिन) से तवांग (अरुणाचल प्रदेश) तक किया गया। आप कई समाचार-पत्रों के नियमित स्तंभकार रहे हैं – आपके विचार और वक्तव्य क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर, न्यूयार्क टाइम्स के साथ जापानी, चीनी अखबारों में प्रकाशित हो चुके हैं। आप को चीन पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव पर एक पुस्तक लेखन के लिए यूएसआई का प्रतिष्ठित 'एमईए चेयर ऑफ एक्सीलेंस' प्रदान किया गया । तमिलनाडु में आपके साहित्यिक और मीडिया कार्यों की अत्यधिक सराहना की जाती है और आप मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी. रामसुब्रमण्यम द्वारा कंबन कझगम अकादमी से "अरुंथमिज अरवलर पुरस्कार" प्राप्त करने वाले पहले उत्तर भारतीय हैं।

एक सांसद के रूप में आप को विदेश, रक्षा और शिक्षा संबंधी मामलों के लिए स्थायी संसदीय समितियों में नामित किया गया।

आप भारत-इजराइल संबंधों पर भारत की पहली पत्रिका नमस्ते शालोम के मुख्य संपादक रहे, जिसे भारत के माननीय राष्ट्रपति ने ग्रहण किया। हाल ही में आप को पत्रकारिता एवं साहित्य के लिए प्रतिष्ठित हिंदी संस्थान का शीर्ष वार्षिक राष्ट्रीय पुरस्कार 2019 - 'हिंदी गौरव' सम्मान प्रदान किया गया।

हाल ही में श्यामा प्रसाद मुखर्जी पर लिखी आप की पुस्तक का प्रकाशन पब्लिकेशन डिविजन, भारत सरकार ने किया जिसे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ग्रहण किया।